अमर चित्र कथा

भीम और हनुमान

क्र. ५२७ | रु. ९०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं - भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

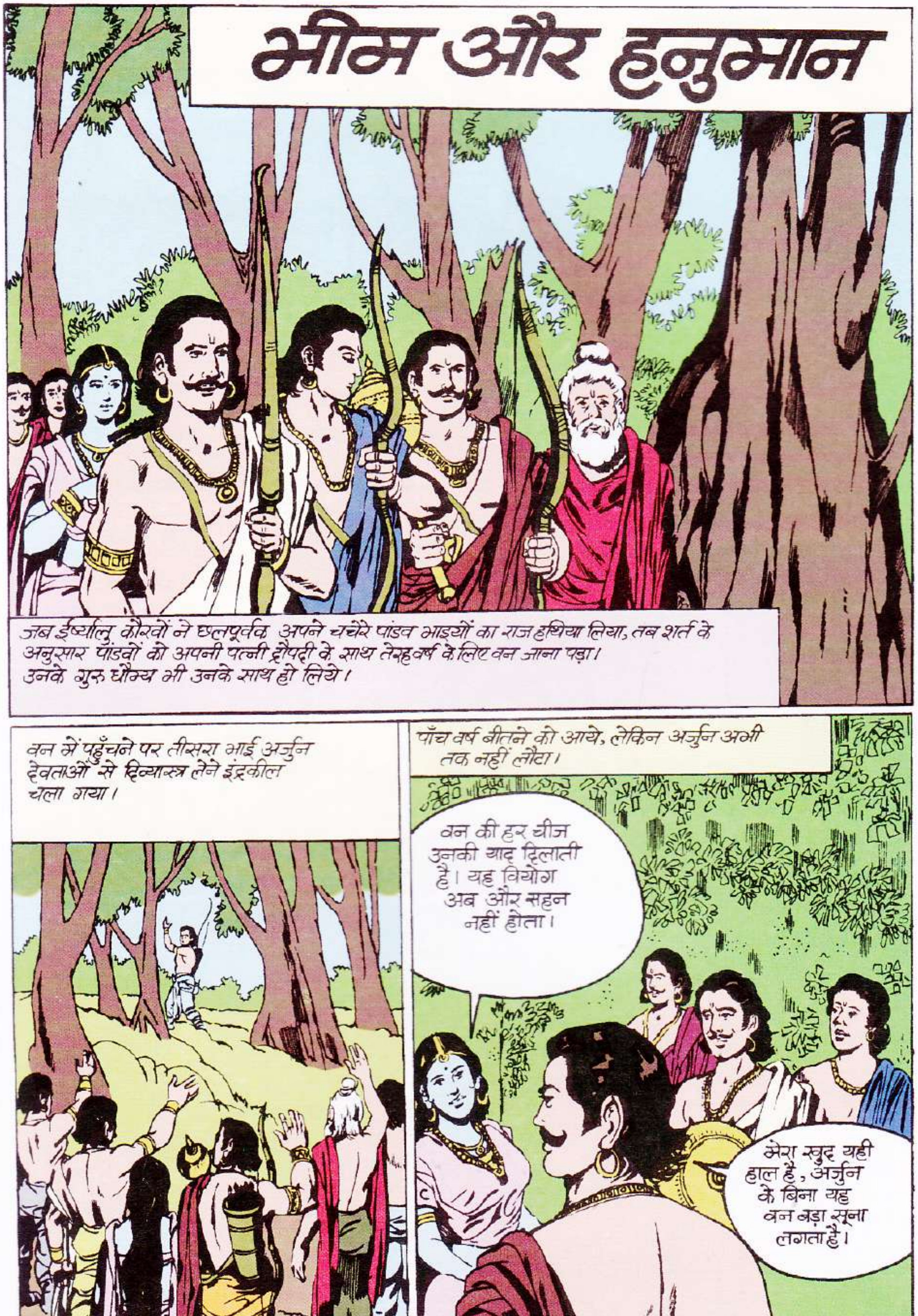
दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

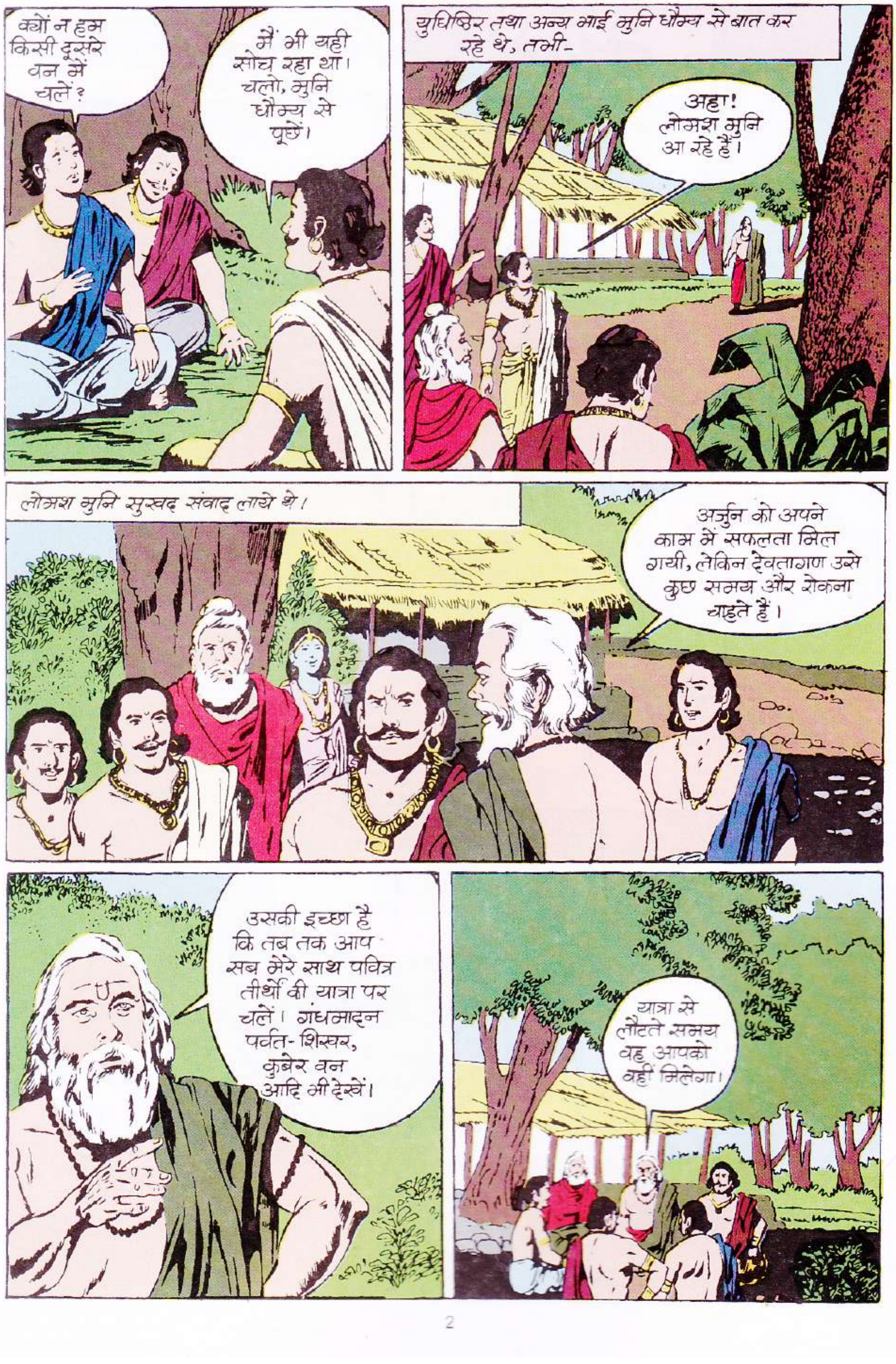
समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

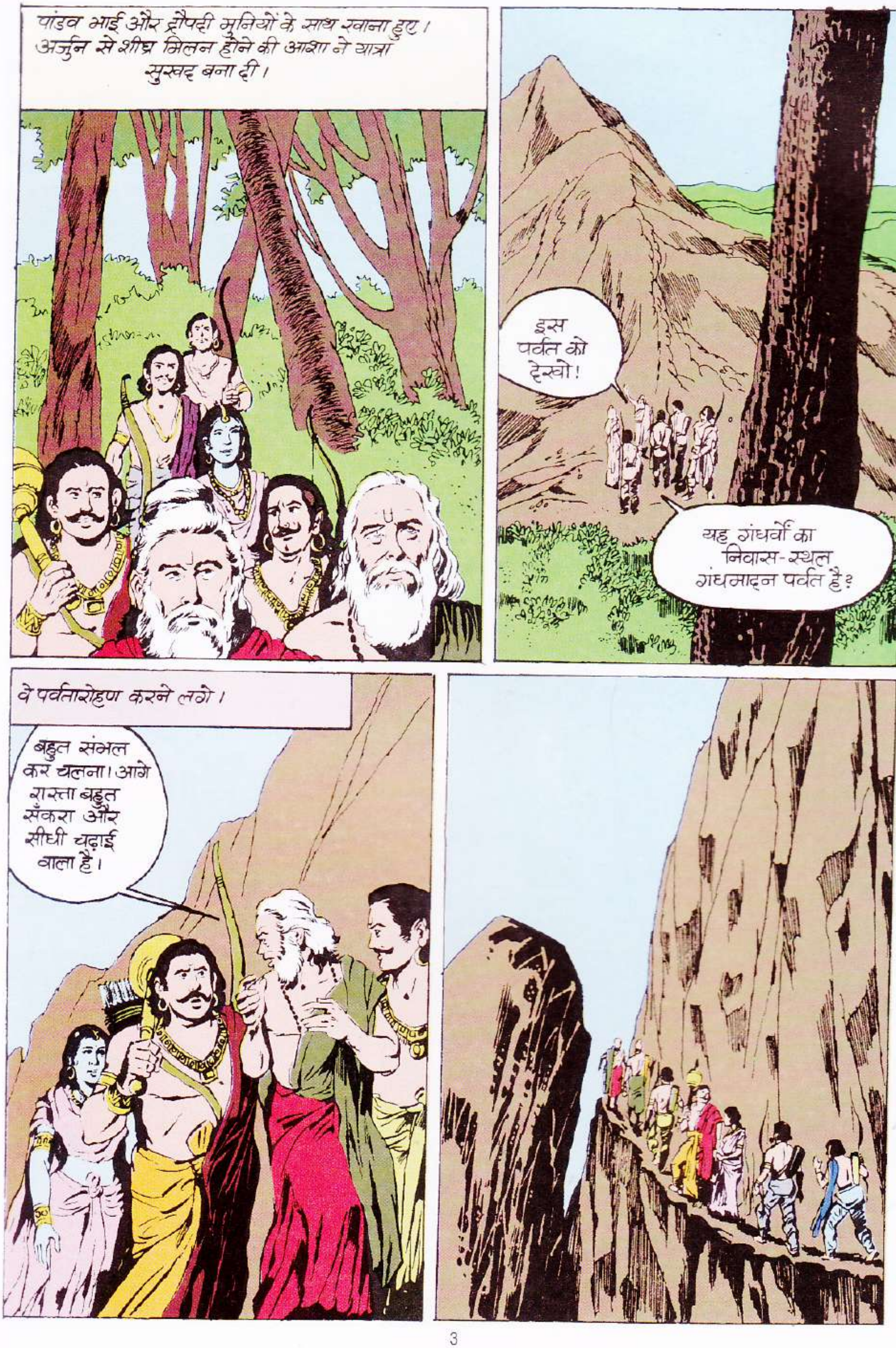
कथा	चित्र	संपादक
कमला चन्द्रकांत	एम.एन.नानगरे	अनंत पै

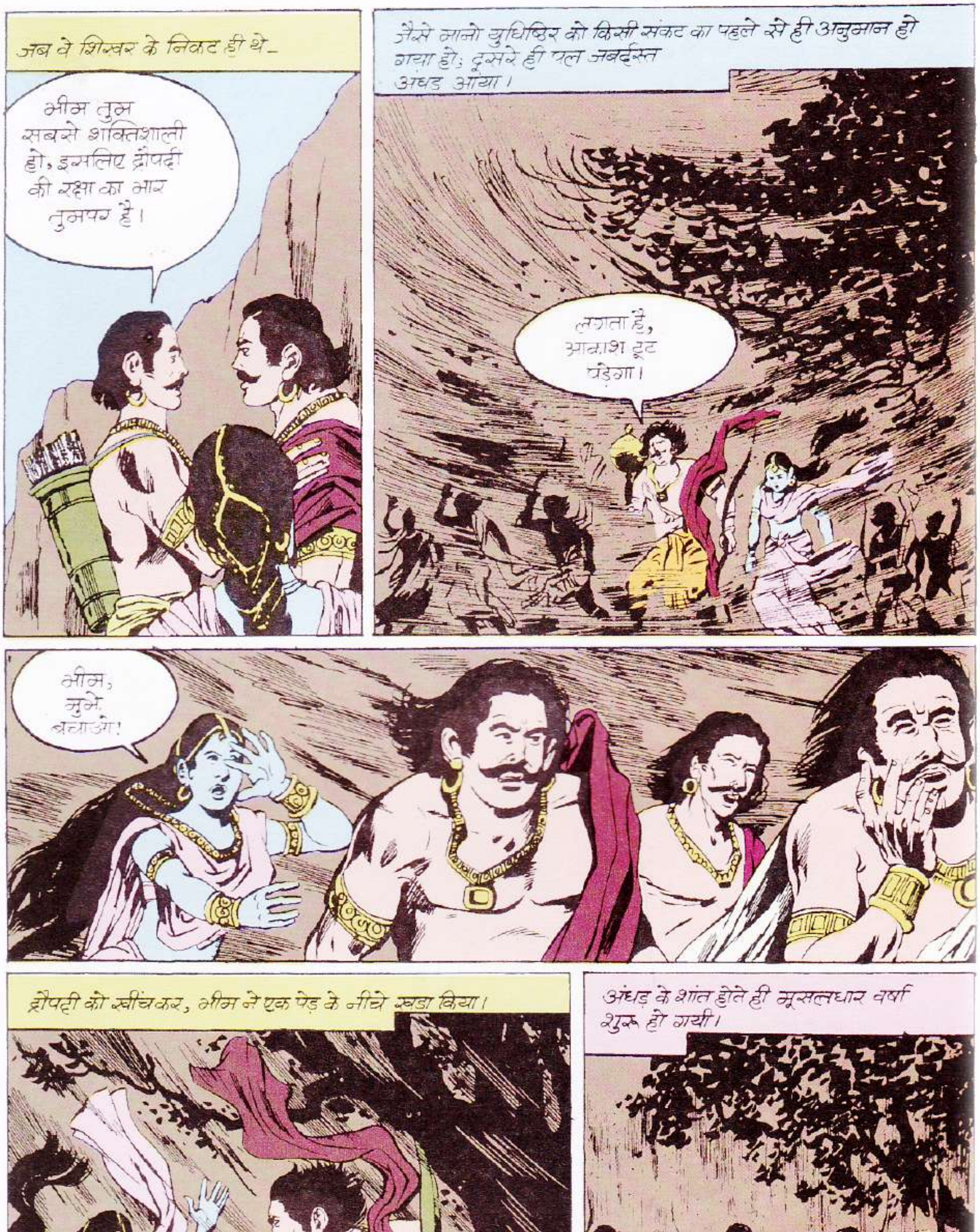
Amar Chitra Katha Pvt Ltd

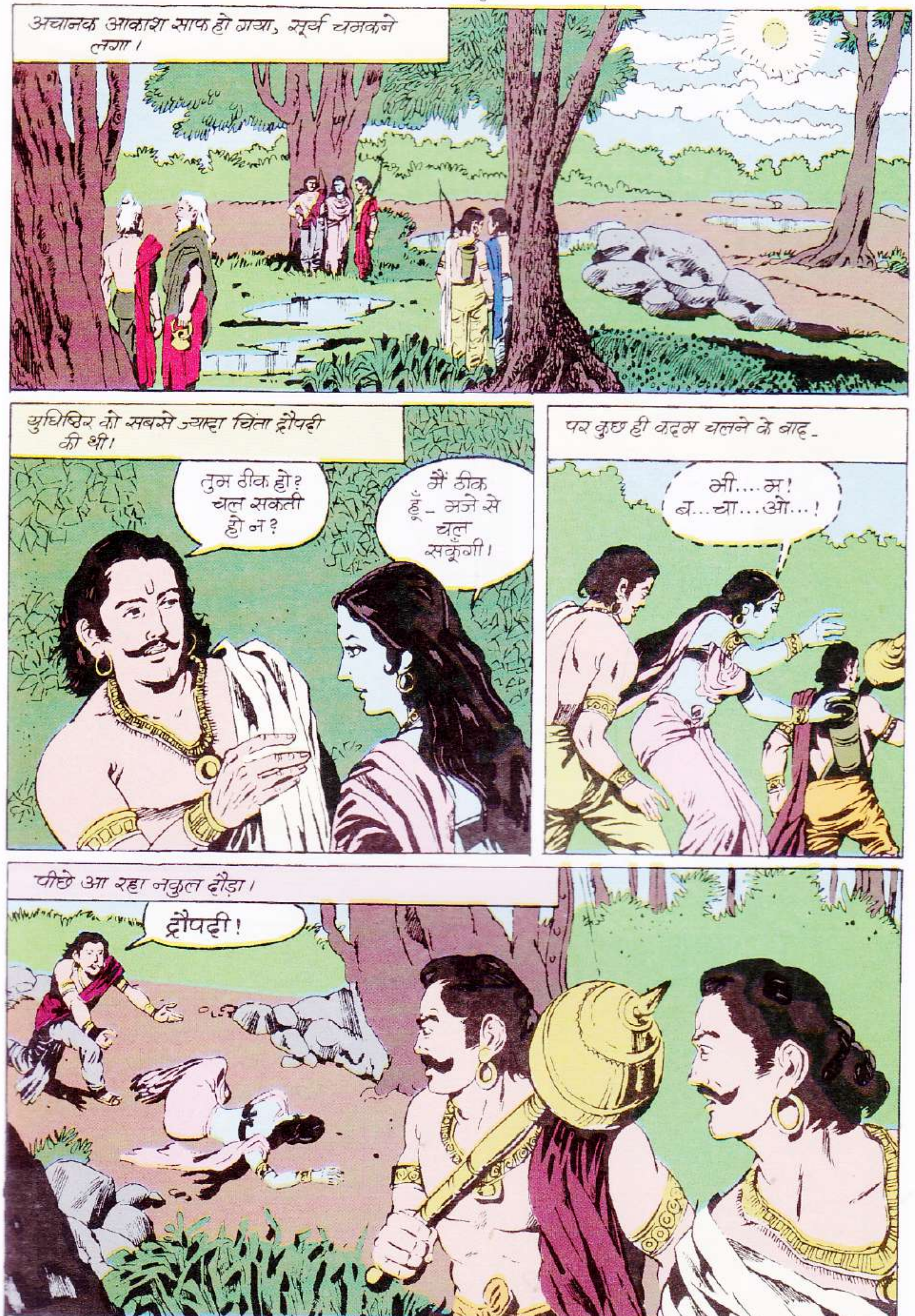
ISBN 978-81-8482-262-5
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

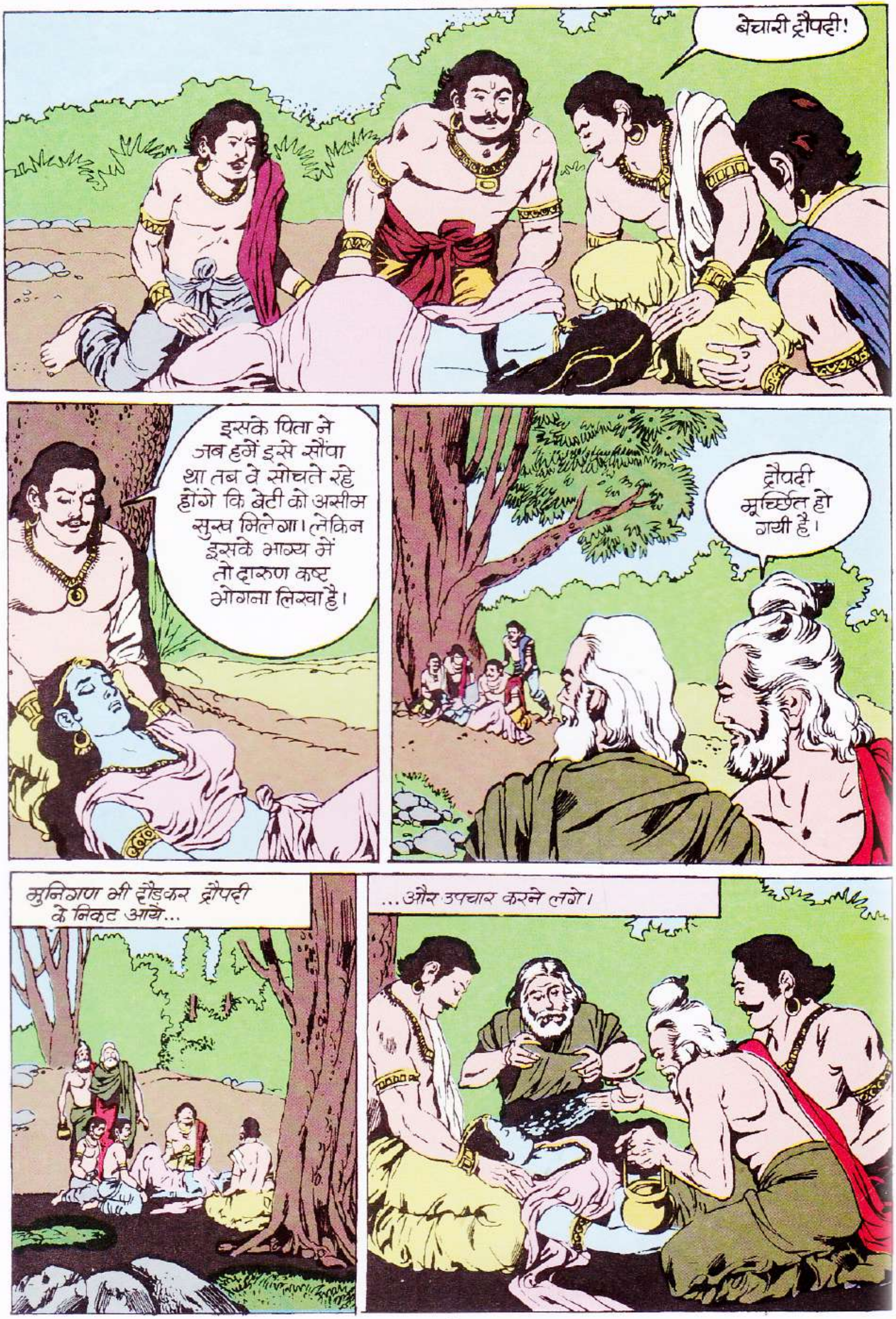

भीम और हनुमान
जब ईर्ष्यालु कौरवों ने छलपूर्वक अपने चचेरे पांडव भाइयों का राज हथिया लिया, तब शर्त के अनुसार पांडवों को अपनी पत्नी द्रौपदी के साथ तेरह वर्ष के लिए वन जाना पड़ा। उनके गुरु धौम्य भी उनके साथ हो लिये।
वन में पहुँचने पर तीसरा भाई अर्जुन देवताओं से दिव्यास्त्र लेने इंद्रकील चला गया।
पाँच वर्ष बीतने को आये, लेकिन अर्जुन अभी तक नहीं लौटा।
वन की हर चीज उनकी याद दिलाती है। यह वियोग अब और सहन नहीं होता।
मेरा खुद यही हाल है, अर्जुन के बिना यह वन बड़ा सूना लगता है।

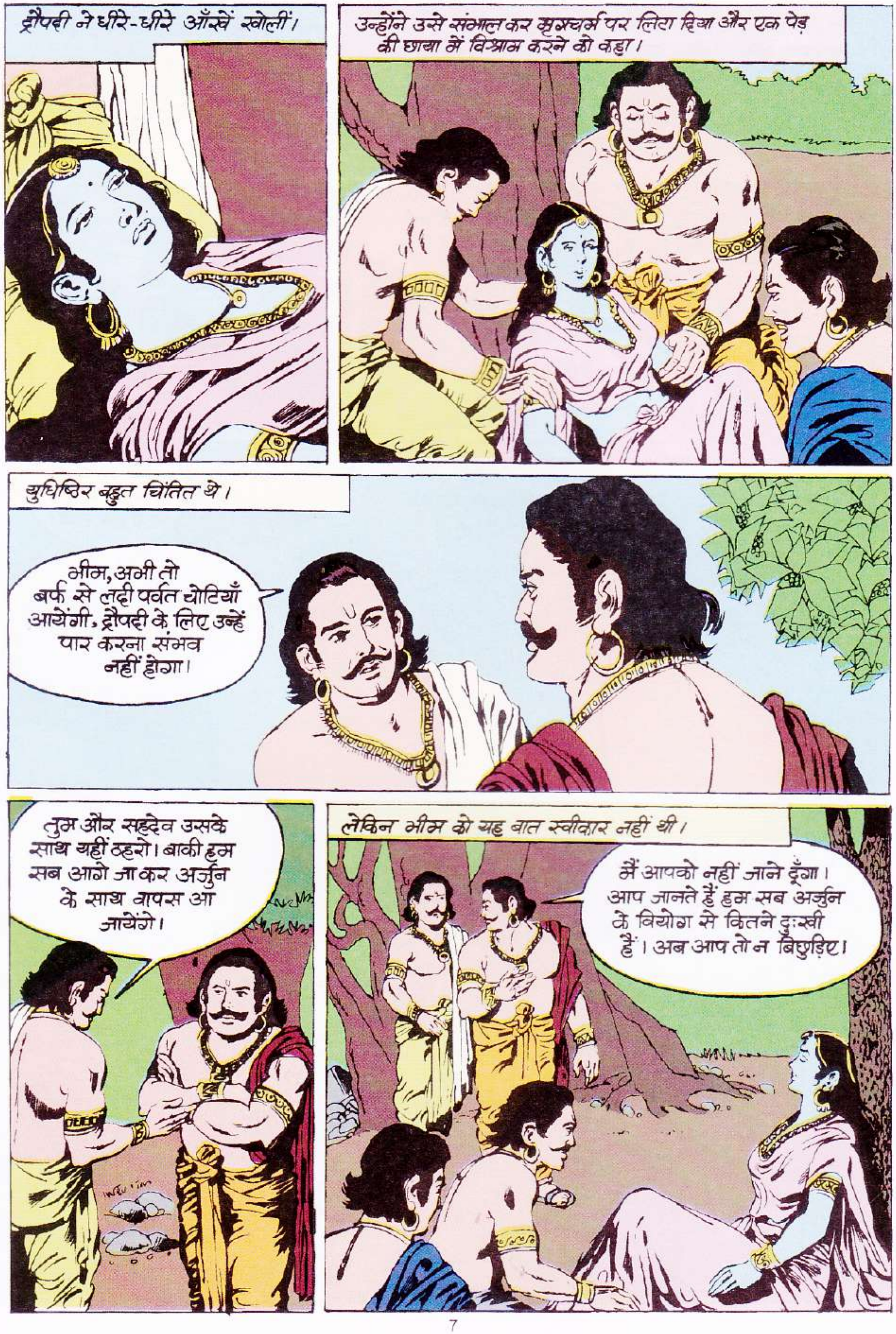

क्यों न हम किसी दूसरे वन में चलें?
मैं भी यही सोच रहा था। चलो, मुनि धौम्य से पूछें।
युधिष्ठिर तथा अन्य भाई मुनि धौम्य से बात कर रहे थे, तभी-
अहा! लोमश मुनि आ रहे हैं।
लोमश मुनि सुखद संवाद लाये थे।
अर्जुन को अपने काम में सफलता मिल गयी, लेकिन देवतागण उसे कुछ समय और रोकना चाहते हैं।
उसकी इच्छा है कि तब तक आप सब मेरे साथ पवित्र तीर्थों की यात्रा पर चलें। गंधमादन पर्वत-शिखर, कुबेर वन आदि भी देखें।
यात्रा से लौटते समय वह आपको वहीं मिलेगा।

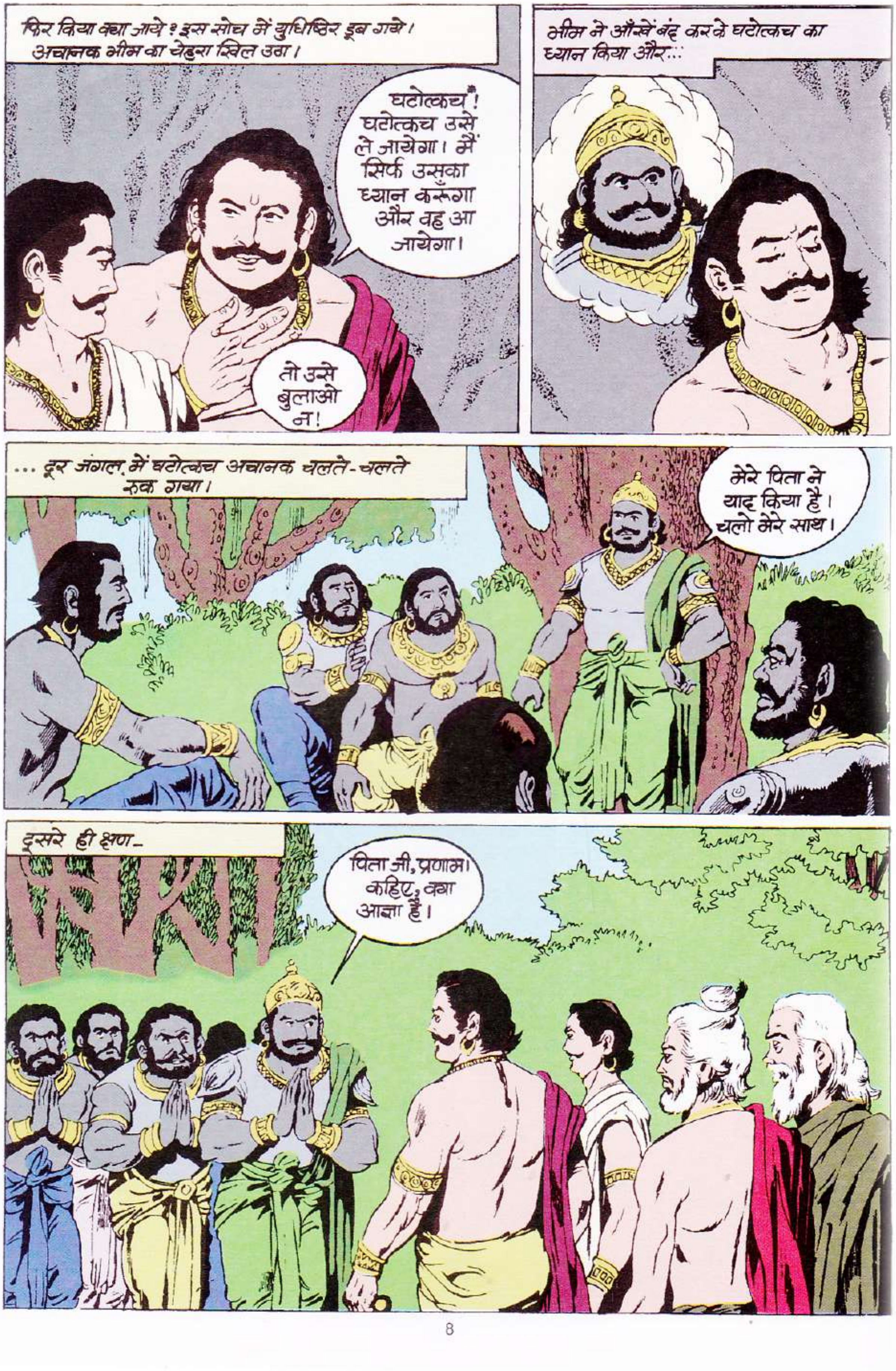

पांडव भाई और द्रौपदी मुनियों के साथ रवाना हुए। अर्जुन से शीघ्र मिलन होने की आशा ने यात्रा सुखद बना दी।
इस पर्वत को देखो!
यह गंधर्वों का निवास-स्थल गंधमादन पर्वत है?
वे पर्वतारोहण करने लगे।
बहुत संभल कर चलना। आगे रास्ता बहुत सँकरा और सीधी चढ़ाई वाला है।


जब वे शिखर के निकट ही थे–
भीम तुम सबसे शक्तिशाली हो, इसलिए द्रौपदी की रक्षा का भार तुमपर है।
जैसे मानो युधिष्ठिर को किसी संकट का पहले से ही अनुमान हो गया हो; दूसरे ही पल जबर्दस्त अंधड़ आया।
लगता है, आकाश टूट पड़ेगा।
भीम, मुझे बचाओ!
द्रौपदी को खींचकर, भीम ने एक पेड़ के नीचे खड़ा किया।
अंधड़ के शांत होते ही मूसलधार वर्षा शुरू हो गयी।

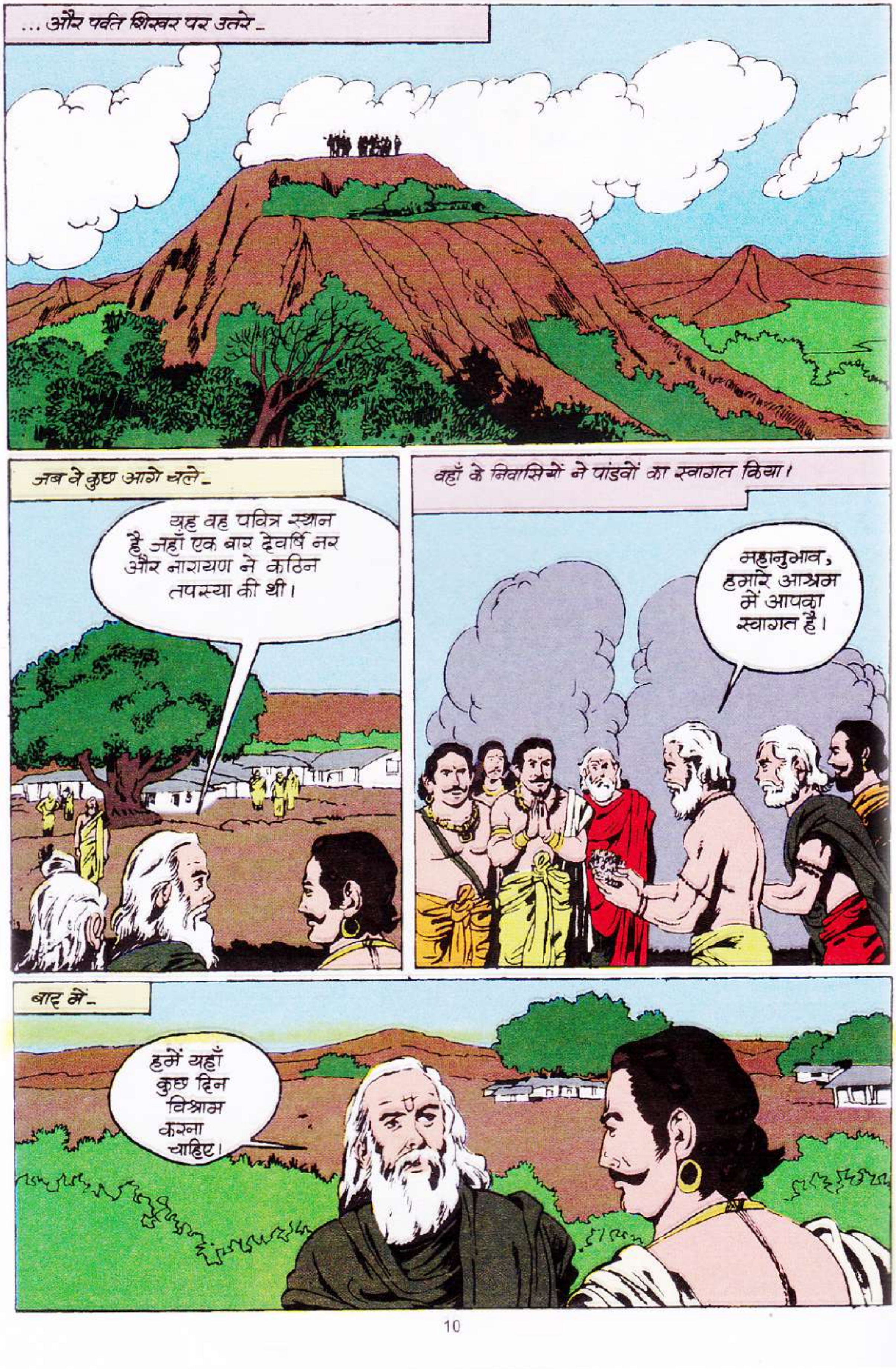

अचानक आकाश साफ हो गया, सूर्य चमकने लगा।
युधिष्ठिर को सबसे ज्यादा चिंता द्रौपदी की थी।
तुम ठीक हो? चल सकती हो न?
मैं ठीक हूँ - मजे से चल सकूँगी।
पर कुछ ही कदम चलने के बाद -
भी....म! ब...चा...ओ...!
पीछे आ रहा नकुल दौड़ा।
द्रौपदी!


बेचारी द्रौपदी!
इसके पिता ने जब हमें इसे सौंपा था तब वे सोचते रहे होंगे कि बेटी को असीम सुख मिलेगा। लेकिन इसके भाग्य में तो दारुण कष्ट भोगना लिखा है।
द्रौपदी मूर्च्छित हो गयी है।
मुनिगण भी दौड़कर द्रौपदी के निकट आये...
...और उपचार करने लगे।


द्रौपदी ने धीरे-धीरे आँखें खोलीं।
उन्होंने उसे संभाल कर मृगचर्म पर लिटा दिया और एक पेड़ की छाया में विश्राम करने को कहा।
युधिष्ठिर बहुत चिंतित थे।
भीम, अभी तो बर्फ से लदी पर्वत चोटियाँ आयेंगी, द्रौपदी के लिए उन्हें पार करना संभव नहीं होगा।
तुम और सहदेव उसके साथ यहीं ठहरो। बाकी हम सब आगे जा कर अर्जुन के साथ वापस आ जायेंगे।
लेकिन भीम को यह बात स्वीकार नहीं थी।
मैं आपको नहीं जाने दूँगा। आप जानते हैं हम सब अर्जुन के वियोग से कितने दुःखी हैं। अब आप तो न बिछुड़िए।


फिर किया क्या जाये? इस सोच में युधिष्ठिर डूब गये। अचानक भीम का चेहरा खिल उठा।
घटोत्कच! घटोत्कच उसे ले जायेगा। मैं सिर्फ उसका ध्यान करूँगा और वह आ जायेगा।
तो उसे बुलाओ न!
भीम ने आँखें बंद करके घटोत्कच का ध्यान किया और...
... दूर जंगल में घटोत्कच अचानक चलते-चलते रुक गया।
मेरे पिता ने याद किया है। चलो मेरे साथ।
दूसरे ही क्षण_
पिता जी, प्रणाम। कहिए, क्या आज्ञा है।


घटोत्कच, अपनी इच्छानुसार तुम कहीं भी उड़ सकते हो। हमें पर्वत शिखर पर जाना है, तुम द्रौपदी को वहाँ ले चलो।
नीचे-नीचे उड़ना, ताकि उसे कष्ट न हो।
कष्ट का कोई प्रश्न ही नहीं है। आप सब मेरे साथ रहेंगे। मेरे ये साथी सबको ले चलेंगे।
राक्षस सबको ले उड़े...


... और पर्वत शिखर पर उतरे -
जब वे कुछ आगे चले -
यह वह पवित्र स्थान है जहाँ एक बार देवर्षि नर और नारायण ने कठिन तपस्या की थी।
वहाँ के निवासियों ने पांडवों का स्वागत किया।
महानुभाव, हमारे आश्रम में आपका स्वागत है।
बाद में -
हमें यहाँ कुछ दिन विश्राम करना चाहिए।

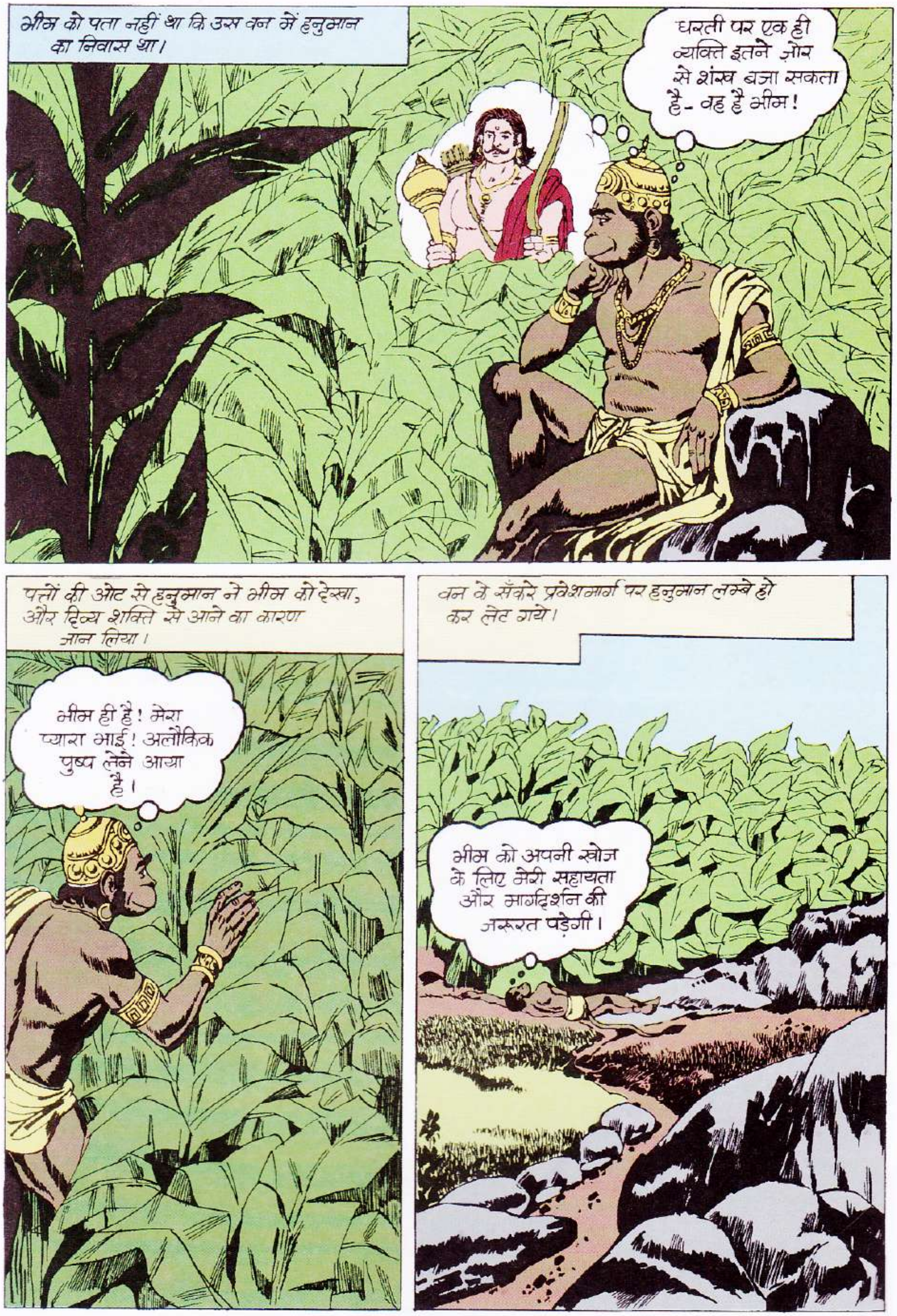

कुछ दिन बाद, भीम और द्रौपदी आश्रम के मनोरम वन में घूम रहे थे कि –
भीम, देखो कैसा अनुपम पुष्प है!
इसकी सुगंध कितनी मोहक है।
मैं इसे युधिष्ठिर को दूंगी। पर मेरा मन है, ऐसे कुछ फूल यहाँ से ले चलें।
प्रिय भीम! ला दोगे न!


फिर द्रौपदी आश्रम में लौट गयी।
प्यारी द्रौपदी, तुम्हारे योग्य तुम्हें कुछ भी तो नहीं दे पाते हम। जरूरत पड़ी तो इन फूलों के लिए मैं पृथ्वी का कोना-कोना छान मारूँगा।
जिधर से फूल उड़ कर आया था, उस दिशा में भीम बढ़ चले।
सारा पर्वत देख डाला, फूल कहीं नहीं थे।
आश्रम से रवाना हुए बहुत देर हो गयी। अब मुझे लौटना चाहिए।
पर, बिना फूल लिये कैसे लौट सकता हूँ!
कुछ देर और खोज लूँ।
वह जंगल में भीतर तक धँसता चला गया।


अचानक _
दुष्ट जंगली हाथी!
एक पल बाद ही वह हाथी भीम को कुचल डालता...
... लेकिन भीम ने उसे दाँतों से पकड़ लिया...
... और जमीन पर दे मारा।


बेचारा पशु! तुझे मारने के सिवाय कोई चारा न था!
मार्ग में आने वाले जानवरों को डराता-धमकाता भीम आगे बढ़ता गया।
जब वह थोड़ा खुले में आया, उसने पर्वत के नीचे एक कदली वन देखा।
मार्ग की सब बाधाओं को पार करता हुआ वह उस ओर बढ़ने लगा।
शायद उस पर्वत पर फूल मिलें।

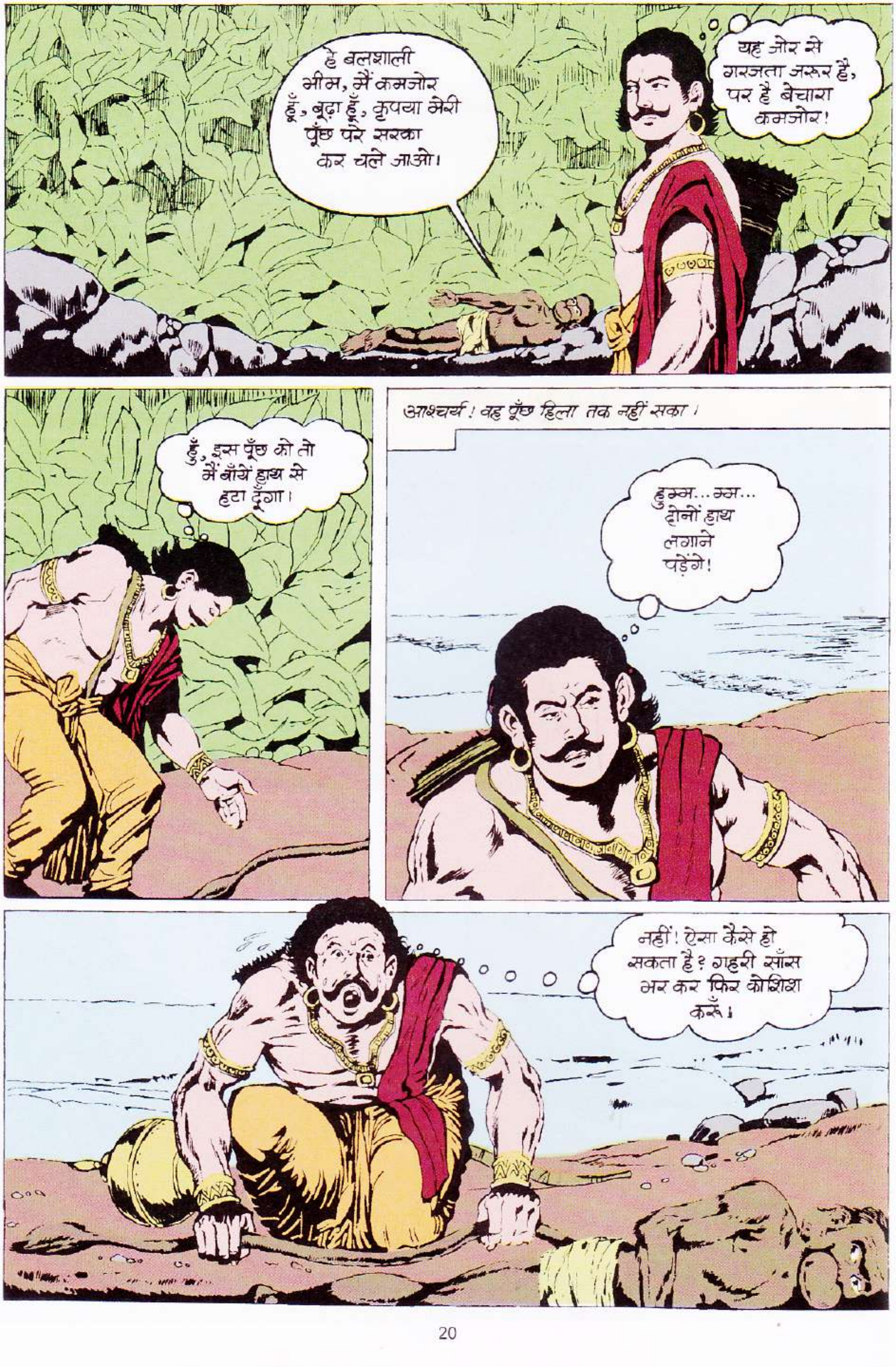

कदलीवन के पास उसने एक झील देखी।
कितना शीतल और ताजगी भरा जल है! कदली वन में जाने से पहले जरा नहा लूँ।
स्नान करने के बाद, भीम ने पूरी शक्ति से शंख बजाया।
अब कदली वन में प्रवेश करूँगा।


भीम को पता नहीं था कि उस वन में हनुमान का निवास था।
धरती पर एक ही व्यक्ति इतने ज़ोर से शंख बजा सकता है- वह है भीम!
पत्तों की ओट से हनुमान ने भीम को देखा, और दिव्य शक्ति से आने का कारण जान लिया।
भीम ही है! मेरा प्यारा भाई! अलौकिक पुष्प लेने आया है।
वन के सँकरे प्रवेशमार्ग पर हनुमान लम्बे हो कर लेट गये।
भीम को अपनी खोज के लिए मेरी सहायता और मार्गदर्शन की जरूरत पड़ेगी।


भीम का ध्यान आकर्षित करने को वे जमीन पर अपनी पूँछ जोर-जोर से पटकने और गरजने लगे।
भीम को अपनी शक्ति पर बड़ा घमंड है। मैं उसे विनम्र होने की शिक्षा दूँगा।
अब हनुमान इतने जोर से गरजे कि पहाड़ हिलने लगे, पत्थर टूटने लगे।
एक पल को भीम भी डर गया!
ये कर्णभेदी आवाजें वन में से आ रही हैं।
किंतु जब वह वन की ओर बढ़ा और जो दृश्य देखा तो उसे हँसी आ गयी।
हा! हा! हो! हो! यह तो एक साधारण बंदर है। जरा छेड़ कर देखूँ।


पास जा कर भीम गुर्राया।
ग-र्र-ग-र्र!
हनुमान ने पलट कर उपेक्षा से उसकी ओर देखा।
मैं बीमार हूँ। सो रहा था, तुमने जगा दिया। मनुष्य होने के नाते तुम तो हमसे अधिक बुद्धिमान हो। तुम्हें थोड़ा ध्यान रखना चाहिए था। कौन हो तुम?
पवनदेव के वरदान से, कुंती की कोख से उत्पन्न पांडुपुत्र भीम हूँ।
यहाँ क्यों आये? मनुष्य इस रास्ते से आगे नहीं जा सकता। मूर्खता मत करो, वापस चले जाओ।
इस बंदर की यह मजाल कि इस तरह बोले!


मूर्ख बंदर, मुझे जाने दे, नहीं तो कुचल कर रख दूँगा।
भीम को भड़कते देख कर हनुमान को मजा आया, पर वे गंभीर बने रहे।
मैं बीमार हूँ, हिल-डुल नहीं सकता। भीतर जाना ही है तो मुझे लाँघ कर जाओ।
ऐसा करना पाप न होता तो मैं अभी तुम्हें ही क्या इस पर्वत को भी लाँघ जाता, उसी तरह जैसे हनुमान सीता की खोज में समुद्र लाँघ गये थे।
कौन है यह हनुमान?
वे मेरे परम शक्तिशाली, बुद्धिमान, रूपवान भाई हैं। मैं भी उन्हीं की तरह बलवान हूँ। इसलिए उठो, मुझे जाने दो, नहीं तो सीधे यमलोक भेज दूँगा।


हे बलशाली भीम, मैं कमजोर हूँ, बूढ़ा हूँ, कृपया मेरी पूँछ परे सरका कर चले जाओ।
यह जोर से गरजता जरूर है, पर है बेचारा कमजोर!
हुँ, इस पूँछ को तो मैं बाँयें हाथ से हटा दूँगा।
आश्चर्य! वह पूँछ हिला तक नहीं सका।
हुम्म... म्म... दोनों हाथ लगाने पड़ेंगे!
नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है? गहरी साँस भर कर फिर कोशिश करूँ।

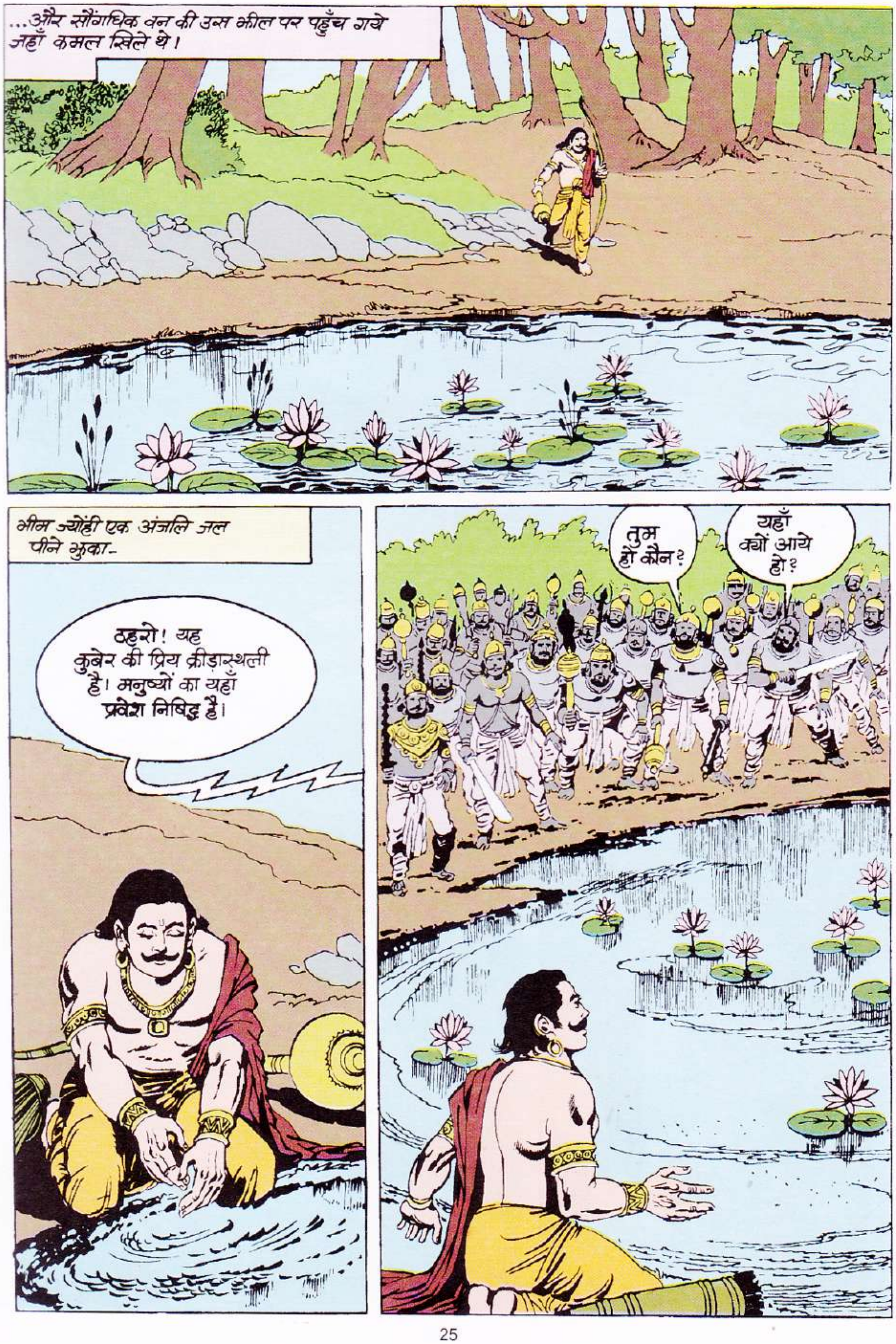

पूरी ताकत से, उसने फिर जोर लगाया।
माजरा क्या है? मैं, भीम, इस अदने बंदर की पूँछ नहीं सरका सकता!
पर क्या यह मामूली बंदर मात्र है? नहीं, कौन होगा भला यह?
हे शूरवीर, मेरे अशिष्ट शब्दों के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए और आप हैं कौन यह बताने की कृपा कीजिए।
मैं तुम्हारा भाई हनुमान हूँ। इस मार्ग के बाद से स्वर्गलोक प्रारंभ हो जाता है।


भीम ने हनुमान के चरण स्पर्श किये।
मेरे भाई! हनुमान! मेरे जैसा भाग्यशाली कोई नहीं, मैंने आपके दर्शन किये! दया कर के समुद्र पार करते समय का अपना विराट रूप भी मुझे दिखाइए।
अचानक हनुमान के शरीर का आकार बढ़ने लगा और...
...देखते-देखते गंधमादन पर्वत से भी ऊँचा हो गया।



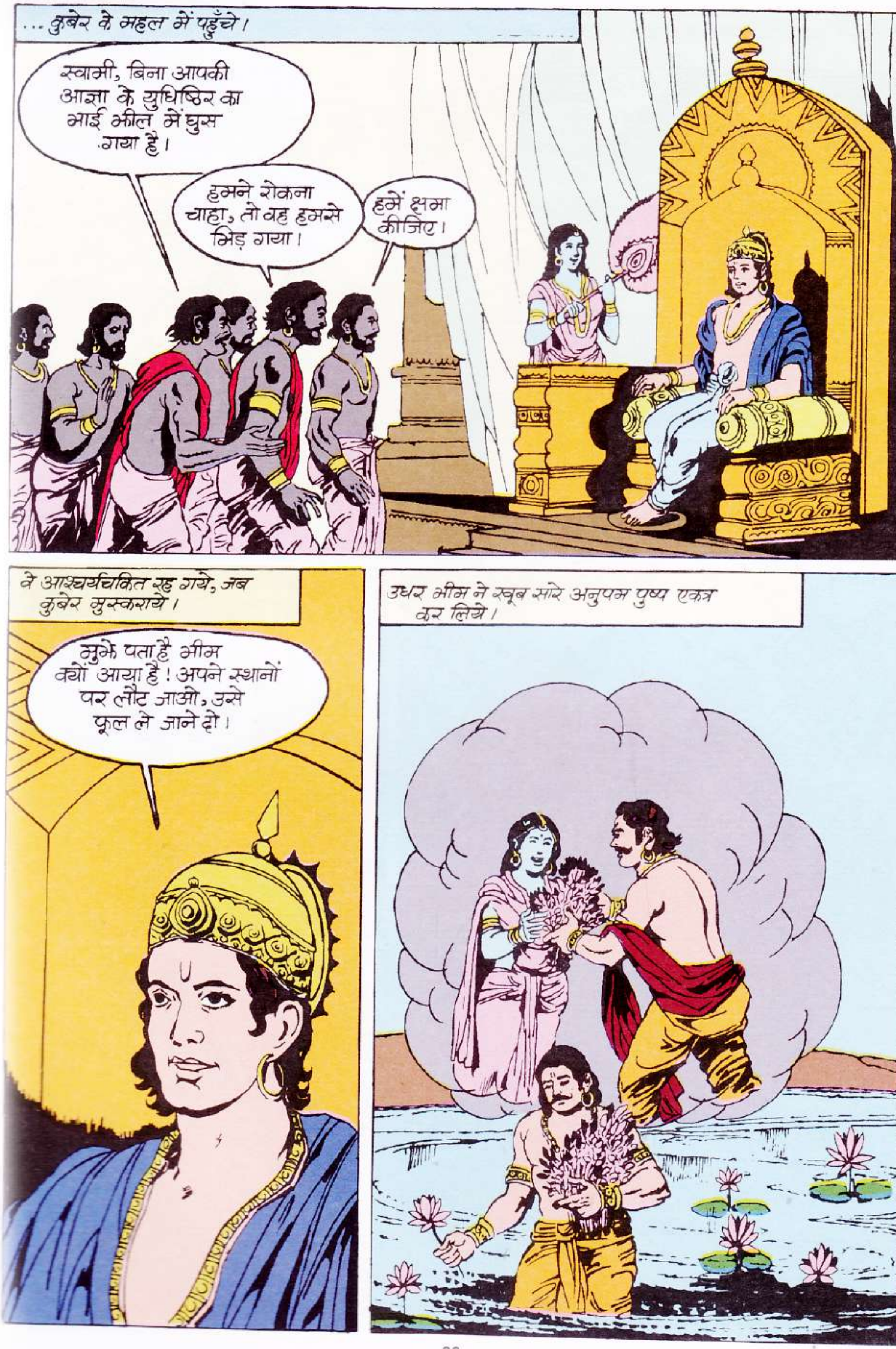
बस, बस! मुझे मूर्च्छा आ रही है। आपके शरीर के तेज ने चका-चौंध कर दिया है।
अपने पूर्वस्वरूप में लौटकर हनुमान ने भीम को गले लगाया।
मेरे शरीर में एक विचित्र शक्ति प्रवेश कर रही है।
मेरी थकान मिट गयी। आपके आशीर्वाद और आपकी शक्ति से हमें अपने शत्रुओं पर विजय अवश्य प्राप्त होगी।
शत्रु पर आक्रमण के समय मैं तुम्हें और अधिक शक्ति दूंगा। अर्जुन की पताका पर बैठकर जब मैं गर्जना करूँगा तो तुम्हारे शत्रु थर्रा उठेंगे।


तब हनुमान ने भीम को एक पथ दिखाया।
उस रास्ते से तुम कुबेर के प्रिय सौगंधिक वन में पहुँच जाओगे। वहाँ तुम्हें मनचाहे अलौकिक फूल मिलेंगे।
इतनी देर से जिस भावावेग को हनुमान रोके हुए थे, वह विदा की बेला में फूट पड़ा। वे रो पड़े।
भीम! तुम्हें देख कर मेरी छाती शीतल हुई। वापस जाने पर मेरा जिक्र भले ही करना, पर मेरे निवास का पता किसी को मत बताना।
और हनुमान लोप हो गये।
मुझे फूल ले कर तुरंत आश्रम लौटना चाहिए। युधिष्ठिर चिंतित होंगे।
भीम ने तेजी से पाँव बढ़ाये...


...और सौगंधिक वन की उस झील पर पहुँच गये जहाँ कमल खिले थे।
भीम ज्योंही एक अंजलि जल पीने झुका-
ठहरो! यह कुबेर की प्रिय क्रीड़ास्थली है। मनुष्यों का यहाँ प्रवेश निषिद्ध है।
तुम हो कौन?
यहाँ क्यों आये हो?

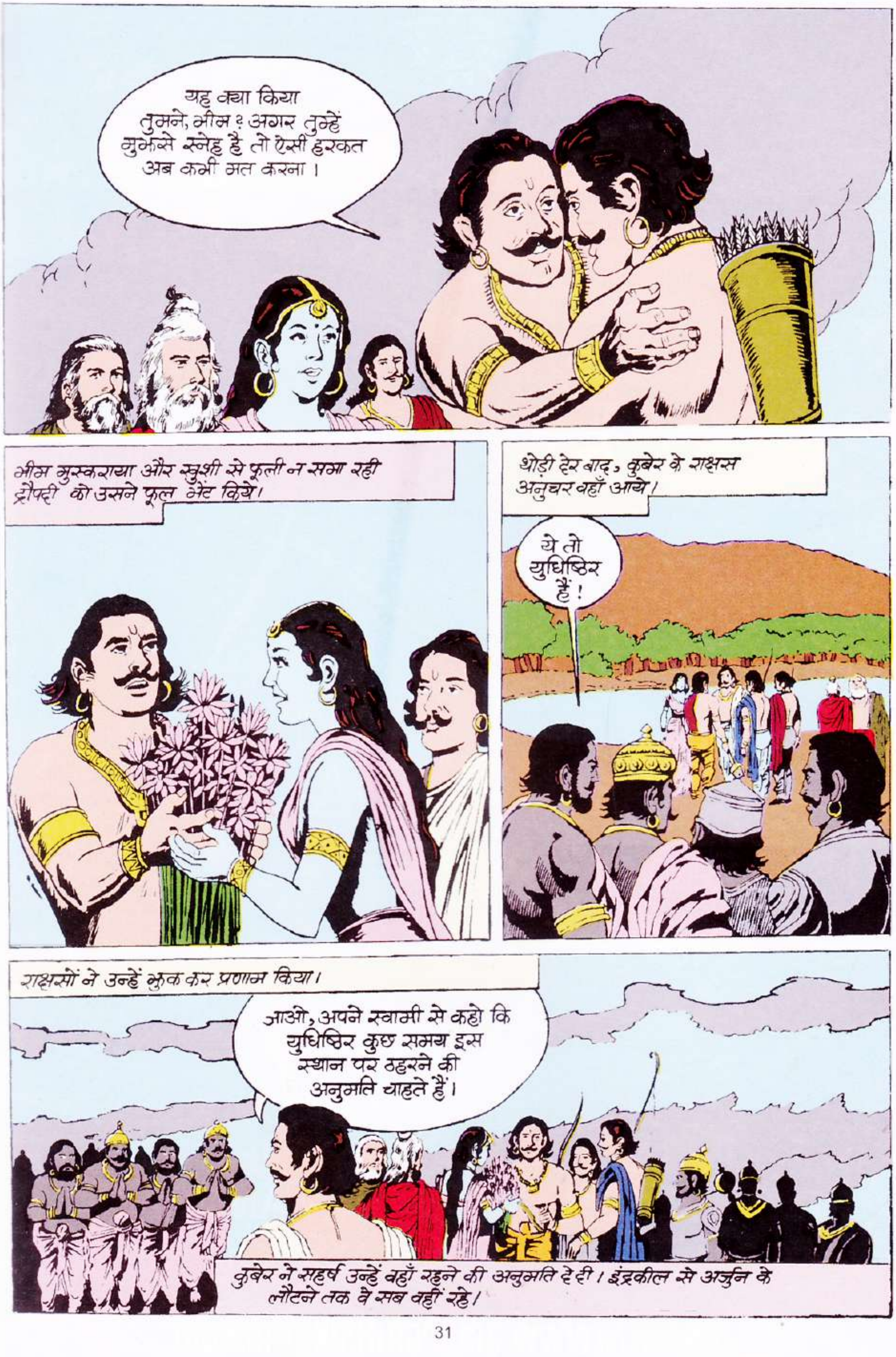

भीम ने आने का उद्देश्य बताया, तो -
तुम बिना कुबेर की आज्ञा के न तो यहाँ का पानी पी सकते हो, न फूल ले सकते हो।
क्या बकवास है! पर्वत पर स्थित यह झील प्रकृति की देन है। इसपर सबका अधिकार है।
यानी तुम फूल जबर्दस्ती ले जाना चाहते हो!
और धर्मराज युधिष्ठिर का भाई होने का दम भरते हो!


बिना उनकी ओर ध्यान दिये भीम ने झील में कदम रखा। क्रुद्ध राक्षस पीछे दौड़े।
पकड़ लो!
बाँध दो!
काट डालो!
इसे खा डालो!
आग बबूला भीम उनपर टूट पड़ा।
आऽऽह!
हाय! मेरी बाँह!
बचाओ!
उसने सैकड़ों राक्षस मार डाले।
भागो!
भागो!
शेष राक्षस आसमान में उड़ कर भागे और...


... कुबेर के महल में पहुँचे।
स्वामी, बिना आपकी आज्ञा के युधिष्ठिर का भाई झील में घुस गया है।
हमने रोकना चाहा, तो वह हमसे भिड़ गया।
हमें क्षमा कीजिए।
वे आश्चर्यचकित रह गये, जब कुबेर मुस्कराये।
मुझे पता है भीम क्यों आया है! अपने स्थानों पर लौट जाओ, उसे फूल ले जाने दो।
उधर भीम ने खूब सारे अनुपम पुष्प एकत्र कर लिये।


द्रौपदी फूल पा कर कितनी प्रसन्न होगी; यह सोच कर भीम जल में किलोल करने लगा।
उसने इतनी शक्ति से पानी उछालना शुरू किया कि सारी झील में तूफान उठ खड़ा हुआ।
आसमान से तारे टूट कर गिरने लगे, धरती काँपने लगी, अंधड़ आ गया। पशु-पक्षी चीखने-चिल्लाने लगे।
आश्रम में युधिष्ठिर आशंकाग्रस्त हो उठे।
भाइयो, तैयार हो जाओ, लगता है कोई आफत आने वाली है।


पर
भीम
कहाँ गया ?
तभी युधिष्ठिर ने देखा कि द्रौपदी मुस्करा रही है।
द्रौपदी, भीम क्या कोई बड़ा करतब दिखा रहा है, या वे महोदय तुम्हारा कोई खास काम करने गये हैं ?
महाराज, लगता है उन्हें दिव्य कमल के फूल मिल गये हैं।
याद है, एक फूल मैंने आपको भेंट किया था ? वैसे ही कुछ और फूल लाने को मैंने भीम से कहा था।
युधिष्ठिर चिंतित हो कर घटोत्कच से बोले -
तुम्हें झील का पता है। इसके पहले कि वह गंधर्वों को नाराज कर दे और संकट मोल ले, हमें वहाँ ले चलो।
घटोत्कच और उसके साथी राक्षस उन सबको झील पर ले आये।
वह रहा भीम! बड़ा प्रसन्न दिखाई दे रहा है!


यह क्या किया तुमने, भीम? अगर तुम्हें मुझसे स्नेह है तो ऐसी हरकत अब कभी मत करना।
भीम मुस्कराया और खुशी से फूली न समा रही द्रौपदी को उसने फूल भेंट किये।
थोड़ी देर बाद, कुबेर के राक्षस अनुचर वहाँ आये।
ये तो युधिष्ठिर हैं!
राक्षसों ने उन्हें झुक कर प्रणाम किया।
जाओ, अपने स्वामी से कहो कि युधिष्ठिर कुछ समय इस स्थान पर ठहरने की अनुमति चाहते हैं।
कुबेर ने सहर्ष उन्हें वहाँ रहने की अनुमति दे दी। इंद्रकील से अर्जुन के लौटने तक वे सब वहीं रहे।

महाकाव्य और
पौराणिक कथाएं

भीम और हनुमान

रामायण के वानर नायक, हनुमान और बलवान पांडव राजकुमार, भीम की भेंट महाभारत की अति नाटकीय घटनाओं में से एक है।

हनुमान, पवन देवता, वायु के पुत्र हैं। कुंती पुत्र, भीम का जन्म भी वायु के आशीर्वाद से ही हुआ था। इसीलिए दोनों को भाई कहा जा सकता है। हनुमान चिरंजीव हैं। सदियों बाद जन्मे भीम से हनुमान की भेंट उनके अनश्वर होने के कारण ही संभव हो पाई थी।

द्रौपदी बिना चूके भीम को खतरनाक तथा रोमांचक यात्राओं पर भेजा करती थीं। इस प्रसंग में द्रौपदी के स्त्रियोचित अंतरज्ञान पर विशेष बल दिया गया है।

ISBN 978-81-8482-262-5